ORIGINAL RESEARCH PAPER | Commerce | Volume - 7 | Issue - 2 | February - 2017 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 79.96

cLrj lHkkx dk uSlfxZd jSyh dkslk dk mRiknu ,oa foi.ku O;oLFkk dk eY;kadu

KEYWORDS
रैली ककून, संग्रहकर्ता, कोचिया

Mk- ekuk pkgku
सहायक प्राध्यापक वाणिज्य विभाग, शासकीय काव्योपाध्याय हीरालाल महाविद्यालय, अभनपुर

ABSTRACT संभाग प्राकृतिक सम्पदा से सम्पन्न एवं आदिवासी बहुल क्षेत्र है। रैली कोसा (तसर रेशम) वन्य रेशम का ही एक प्रकार है, जो विश्व में केवल बस्तर संभाग में ही नैसर्गिक रूप से उत्पादित होता है। इसके एक कोकून से 1500–1700 मी. लम्बा धागा प्राप्त किया जाता है। नैसर्गिक कोसा अत्यंत गुणवत्ता युक्त होने के कारण व्यापारियों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा होती है, अतः प्रत्येक प्रमुख व्यापारी अधिकतम कोसा क्रय हेतु फण्ड का प्रवाह नीचे तक फसल आने के पूर्व ही कोचियो तक कर देता है। व्यापारियों द्वारा क्रय हेतु निर्मित निजी विपणन संरचना इतनी सुदृढ़ होती है कि एक–दूसरे पर विश्वास के सहारे करोड़ो रूपये का व्यापार होता है। बड़े व्यापारियों द्वारा क्रय किए गए कोसाफलों को भागलपुर, भगैया, कटोरिया, कटक, चांपा, जांजगीर एवं रायगढ़ क्षेत्र में विक्रय कर दिया जाता है। सीमित दिनों के इस कारोबार में व्यापारियों एवं कोचियों द्वारा आदिवासी संग्रहणकर्ताओं का काफी शोशण किया जाता है।

रैली कोसा के सुदृढ़ विपणन हेतु एक विधिक व्यवस्था कायम करना आवश्यक है।

भारत विष्व का एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ प्राकृतिक रेशम की अनेक किस्मों का उत्पादन होता है। छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र आदिवासी बहुल सघन वन क्षेत्र है, जो आज भी आधुनिक शिक्षा, सामाजिक परिवेश तथा रहन–सहन व्यवस्था से कोसो दूर है।

रैली कोसाफल विष्व में केवल बस्तर संभाग में ही प्राकृतिक रूप से उत्पादित होता है। वर्तमान में कवर्धा के जंगलों में इसके कीट के प्रतिस्थापन एवं संर्वधन का प्रयास किया जा रहा है। रैली कोसा उत्पादन आदिकाल से आदिवासियों द्वारा परंपरागत रूप से घने जंगलों में किया जाता है।

बस्तर में उपलब्ध रैली कोसाफल सबसे बेहतरीन माना जाता है। एक कोकून से 1500–1700 मी. धागा प्राप्त किया जाता है। संपूर्ण बस्तर के वनक्षेत्रों में साल, साजा, अर्जुन, महुआ, बेर, सेन्हा, हर्रा, बेहड़ा वृक्षों पर कोसा के कृमि पत्तियाँ खाकर कोसाफल का निर्माण करते हैं। बस्तर में रैली कोसा नैसर्गिक रूप से विकसित होता है, साथ ही प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला रैली कोसा, टसर कोसा के कीट को, संकर विधि द्वारा विभिन्न प्रजातियाँ तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है। टसर कोसा के कीट को बीजागार केन्द्र में इल्ली के रूप में विकसित कर पुनः साल वृक्षों पर रखा जाता है। यह इल्ली अपने लार से स्वयं को अपने चारों ओर लपेटते जाती है और अंतराल में यही सुखकर एक अंडाकार खोल की शक्ल में दिखाई पड़ता है। इस प्रकार यह कीट कोसा तैयार करती है।

mRiknu {ks=%& रैली कोसा की वर्श में दो फसले होती है, जिन्हें वनवासियों द्वारा वृक्ष से संग्रहण कर स्थानीय हाट बाजारों में विक्रय या विनियम किया जाता है। बस्तर संभाग के अधीनस्थ जगदलपुर जिले में रैली कोसा का उत्पादन अत्यधिक होता है। कांकेर एवं दंतेवाड़ा जिले के अर्न्तगत वे क्षेत्र जहां साल वृक्षों की बहुलता है, रैली कोसा का उत्पादन होता है। नैसर्गिक कोसा के उत्पादन क्षेत्र में उन सभी क्षेत्रों को सम्मिलित किया जा सकता है] जहाँ ये प्राकृतिक रूप से जंगलों में पाए जाते हैं। क्योंकि ग्रामवासी संग्रहकर्ता जंगल से ककून एकत्रित कर समीप के हर साप्ताहिक हाट/बाजार में विक्रय हेतु आता है।

cLrj lHkkx dk uSlfxZd jSyh dkslk mRiknu {ks= ftyokj oxhZdj.k

Dz	mRiknu ¼yk[k esa½	Xkq.koRrk	miyC/k [kk| o{k		ftyk
			de	cgqY;	
1	600	lokZRd"V	lUgk lktk	Lkky	cLrj ¼txnyiqj½
2	75	lokZRd"V		Lkky	nUrsokMk¼lqdek] cjlwj] rkSxiky½
3	25			lky	Dkkadsj ¼dksoy vrkx<+ dks;yhcsMk½
4		lokZRd"V		lky	

L=ksr%& खादी एवं ग्रामोंधोग बोर्ड रेशम विभाग (रायपुर)

uSlfxZd dkslk dh foi.ku O;oLFkk%& बस्तर संभाग में उत्पादित रैली कोसा की विपणन व्यवस्था पूर्णतः स्थानीय व्यापारियों के कब्जे में है। रेशम विभाग या ट्रायफेड के क्रय करने पर व्यापारी कोसा की दर बढ़ा कर शासकीय एजेंसी को क्रय व्यवस्था से बाहर कर देते है। नैसर्गिक कोसा क्रय व्यस्था में व्यापारियों का एकाधिकार है। शासन को भी यदि बीज प्रगुणन हेतु कोसा लेना होता है तो कलेक्टर से दर निर्धारित करवा कर व्यापारियों से ही लिया जाता है। व्यापारियों का नेटवर्क निम्नानुसार प्रवाह से ज्ञात किया जा सकता है।

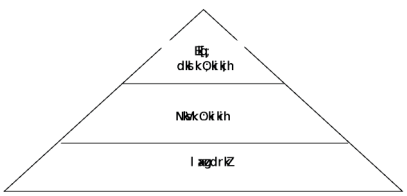

नैसर्गिक कोसा की वर्श में दो फसले होती है। प्रथम फसल अगस्त–सितम्बर में एवं द्वितीय फसल मार्च–अप्रैल–मई में होती है। प्रथम फसल में वर्ष का 80 प्रतिशत कोसा संग्रह होता है जबकि द्वितीय फसल में 20 प्रतिशत का योगदान होता है। मुख्य व्यापारी कोसा क्रय हेतु राशि का प्रवाह नीचे तक फसल आने के एक माह पूर्व की कर देता है। चूँकि नैसर्गिक कोसा अत्यंत गुणवत्तायुक्त होते हैं। अतः व्यापारियों में कड़ी प्रतिस्पर्धा होती है। अतः प्रत्येक प्रमुख व्यापारी अधिकतम कोसा क्रय हेतु राशि फसल आने के पूर्व ही नीचे छोटे–छोटे कोचियों तक फण्ड का प्रवाह नीचे तक कर देते हैं। फसल के स्थानीय हाट/बाजारों में आने पर कोचिए संग्रहकर्त्ताओं से कोसा क्रय कर निश्चित कमीशन प्राप्त कर अपने ऊपर के व्यापारियों को कोसा का परिदान कर देता है यह एक सतत् क्रय प्रक्रिया होती है जो प्रत्येक हाट/बाजारों में अपनायी जाती है।

व्यापारियों में कोसा क्रय के संबंध में कड़ी प्रतिस्पर्धा होने के कारण कोचिये संग्रहकर्ता हितग्रहियों के घर–घर जा कर नैसर्गिक कोसा क्रय भी कर लेता है। ऐसे में स्थानीय हाट/ बाजारों में कोसा की आवक कम प्रतीत होती है। व्यापारियों द्वारा क्रय हेतु निर्मित निजी अधोसंरचना काफी सुदृढ़ होती है एवं एक दूसरे पर विश्वास के आधार पर करोड़ों रूपये का कोसा प्रतिवर्श क्रय किया जाता है।

Volume - 7 | Issue - 2 | February - 2017 | ISSN - 2249-555X | IF : 3.919 | IC Value : 79.96

ulfxd dklk d;{k=%&

क्र.	बाजार का नाम	बाजार लगाने का दिन	अनुमानित कोसा क्रय (नग में)
1.	तोकापाल	सोमवार	2 से 5 लाख
2.	दरभा	बुधवार	25 से 30 लाख
3.	पखनार	मंगलवार	25 से 30 लाख
4.	चिंगपाल	गुरूवार	5 से 7 लाख
5.	ननगुर	शुक्रवार	1 से 1.5 करोड़
6.	चिंड़पाल	शनिवार	5 से 7 लाख
7.	कावापाल	सोमवार	10 से 12 लाख
8.	माड़पाल	मंगलवार	1 से 2 लाख
9.	नगरनार	शुक्रवार	1 से 2 लाख
10.	बस्तर	गुरूवार	2 से 3 लाख
11.	देवड़ा	शनिवार	5 से 7 लाख
12.	दहीपोंगा	शुक्रवार	15 से 20 लाख
13.	कोड़ागांव	रविवार	25 से 30 लाख
14.	नरायणपुर	रविवार	30 से 40 लाख
15.	करपावड़	गुरूवार	8 से 10 लाख
16.	जैतगिरि	रविवार	8 से 10 लाख
17.	कोलावल	शुक्रवार	2 से 3 लाख
18.	गीदम	रविवार	3 से 5 लाख
19.	बारसुर	रविवार	5 से 10 लाख
20.	मरदापाल	शुक्रवार	20 से 25 लाख
21.	कोलेंग	शनिवार	20 से 25 लाख
22.	दंतेवाड़ा	शनिवार	2 से 3 लाख
23.	तोगंपाल	शनिवार	2 से 3 लाख

cM 0;kikfj;k }kjk fupy Lrj l dklk ikIr gku d ckn mu dklk Qyk dk T;knk nj ij Hkkxyij] Hkx;k] dVkfj;k] dVd] dVkfj;k] pkik] tktxhj ,o jk;x< {k= e fod; fd;k tkrk gA सीमित दिनों के इस कारोबार में व्यापारियों को बहुत फायदा होता है। ग्रामीण अंचल में प्रचलित है कि कोचिये एवं व्यापारी उनका शोशण भी करते है। समय–समय पर प्रशासन एवं शासन द्वारा यह निर्णय किया जाता है कि वनोपज संग्रहणकर्ताओं को कोचिये के शोशण से बचाने के लिए कार्ययोजना बनाई जाएगी। किन्तु उसका क्रियान्वयन कारगार नहीं होता।

कुछ समय के लिये स्थानीय शासन द्वारा रैली कोसा हेतु संस्थागत विपणन पद्धति बनाई गयी थी। वर्श 1998 से 2000 तक कलेक्टर बस्तर की अध्यक्षता में एक अपेक्स कमिटी बनाई गयी थी। जिसमें प्रति सप्ताह रैली कोसा का दर निर्धारण किया जाता था, उस दर पर ग्राम स्तरीय समिति के माध्यम से सिल्कफेड़ एवं ट्राईफेड़ द्वारा राशि का प्रवाह कर वनवासी कोसा संग्रहणकर्ताओं से कोसा क्रय किया जाता था। ग्रामस्तर समिति या सेल्फहेल्प ग्रुप जो कोसा क्रय करती थी, उनका अनुमोदन पंचायती राज व्यवस्था के तहत ग्राम सभाओं में किया जाता था। यानी ग्रामसभाओं के अनुमोदन पर ही ये समितियाँ कोसा क्रय करती थी एवं निश्चित कमीशन प्राप्त कर कोसा फलों का परिदान सिल्कफेड़ या ट्राईफेड़ को करती थी। सिल्कफेड़ या ट्राईफेड़ भंडारित कोसाफलों का अग्रिम विक्रय एवं प्रसंस्करण का कार्य करते थे। कुछ कारणोवश स्थानीय प्रशासन की यह संस्थागत विपणन व्यवस्था ज्यादा नहीं चल पाई एवं कोसा बाजारों पर व्यापारियों का पुनः कब्जा हो गया।

नैसर्गिक कोसाफलों का 98% तक तो स्थानीय व्यापारियों द्वारा क्रय कर लिया जाता है, व्यापारियों के प्रभुत्व को कम करने के समस्त शासकीय प्रयास प्रभाव पूर्ण नहीं रहे।

foi.ku 0;oLFkk e lq/kkj gsrq lq>ko%&

रैली ककून संग्रहण प्रक्रिया में निजी व्यापारियों का प्रभुत्व होने से संग्रहकर्ताओं को उचित लाभ ककून की गुणवता के अनुसार नहीं मिल पा रहा है। वर्तमान में शासन द्वारा हितग्राहियों (ककून संग्रहकर्ताओं) से किसी प्रकार का क्रय नहीं किया जा रहा है। जिलाधीश एवं क्रय समिति के निर्धारण के अनुसार विभाग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शासन स्वयं स्थानीय ट्रेडर्स से ककून क्रय की कार्यवाही करते हैं।

संग्रहणकर्ताओं को उचित दर प्रदान करने हेतु नए सिरे से विपणन केन्द्रों की स्थापना कर प्रचलित तात्कालिक दर निर्धारण करते हुए सीधे संग्रहकर्ता को लाभ दिलाने हेतु रेशम विभाग द्वारा प्रयास किया जा सकता है।

रैली कोसा के सुदृढ़ विपणन हेतु एक विधिक व्यवस्था कायम करना आवश्यक है। कोसा को राष्ट्रीकृत वनोपज की सूची में शामिल करना अनिवार्य है।

यदि बस्तर संभाग के रैली कोसे का संरक्षण किया जाए व कोसाफलों की धागाकरण व बुनाई हेतु सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर संस्थाये खोली जाये, तो रैली कोसा का 98% निर्यात संभाग से रोका जा सकेगा। निर्यात कच्चे रूप में न करके, तैयार माल (वस्त्र एवं अन्य रेशम वस्तुएँ) के रूप में करने से अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित हो सकेगी। संभाग के आर्थिक विकास में सहायक होगी।

Reference:-

1. अम्बस्ट, बी.जी. & Kosa industries in Chhattisgarh, 1962
2. चन्द्राकर एम.आर. – बस्तर संभाग में कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास एवं संभावनाएँ
3. Ramadevi O.K. and Rajany T. & Tasar Culture for Tribal welfare and Sustainable Utilization of forest Tree – Status and Prospects
4. Z.M.S. Khan and N. Suryanarayana – Tasar silk yarn & Fabric Production – Status and future prospects.